पेरिस, गाजियाबाद
अगस्त २७, २००६

सन्देश संख्या १७३

काल, अ–काल, कालातीत

(यह सन्देश शिष्य प्रक्रिया और गुरु–प्रक्रिया के मध्य किया गया पत्राचार है।)

प्रणाम गुरुजी,

कई प्रश्न उठे थे, जिनमें एक अभी भी अनुत्तरित है । इन्हें 'अ–ब–स' के साथ मेल द्वारा साझा किया गया था। उसके बाद यह ध्यान घटित हो रहा है। अभी–अभी विचार आया कि इसे आपके साथ भी साझा करूँ ।

प्रश्न १. काल क्या है ?

दो घटनाओं के बीच का अन्तराल । उदाहरण के लिए, किसी भी निश्चित काल में सूर्य के सापेक्ष पृथ्वी की स्थिति तथा अगली बार सूर्य के सापेक्ष पृथ्वी की बिल्कुल उसी स्थिति के मध्य के अन्तराल को एक वर्ष कहा जाता है। या, एक सूर्योदय से अगले सूर्योदय के बीच के अन्तराल को एक दिन कहा जाता है । बाद में, जब व्यावहारिक कारणों से छोटे काल–खण्ड की आवश्यकता हुई तब ३१ दिसम्बर १८९९ को पूरा होने वाले सूर्य आधारित वर्ष के १/३१,५५६, ९२५.९७४७ हिस्से को एक सेकण्ड के रूप में परिभाषित किया गया। इस कालखण्ड के माप में और सूक्ष्मता एवं शुद्धता की आवश्यकता होने कर, तत्व सिजीयम–१३३ के परमाणु की दो क्रमिक ऊर्जा अवस्थाओं के मध्य संक्रमण के दौरान हुए विकीरण के ९, १९२, ६३१, ७७० दालनों में लगे कालखण्ड को एक सेकेण्ड के रूप में परिभाषित किया गया । इससे, ३० लाख वर्षों तक १ सेकण्ड की माप की शुद्धता बनी रहेगी ।

किन्तु सभी परिभाषाओं में, दो घटनाओं के मध्य का अन्तराल ही काल है । वर्तमान में काल की सर्वाधिक परिशुद्ध परिभाषा के अनुसार सर्वाधिक सूक्ष्म अन्तराल है – सिजीयम–१३३ के परमाणु की दो क्रमिक ऊर्जा अवस्थाओं के मध्य संक्रमण के दौरान हुए विकीरण का एक दोलन । इस तहर हमलोग ०.०००००००००१ सेकेण्ड को भी माप सकते हैं। हाँ, इसका बिल्कुल शुद्ध माप सम्भव है किन्तु उपर्युक्त एक दोलन के मध्य का समय या उसके दसवें हिस्सा को या, उससे भी छोटे हिस्से को क्या कहा जाएगा? हमलोग उपर्युक्त संख्याओं को और भी विभाजित कर सकते हैं' किन्तु तथा यही है कि दो घटनाओं के मध्य के अन्तराल को ही हमलोग काल कहते हैं ।

प्रश्न २ (क) – यदि घटनाएँ न हों तो क्या काल होगा ?

प्रश्न २ (ख) – क्या उपर्युक्त प्रश्न का उत्तर विचार के माध्यम से दिया जा सकता है क्योंकि विचार भी एक घटना है ?

प्रश्न २ (ग) – क्या इस प्रश्न का उत्तर दिया जा सकता है?

प्रश्न २ (घ) – क्या उत्तर एक विचार नहीं है ?

प्रश्न २ (ङ) – क्या कालातीत अज्ञेय है ?

प्रणाम गुरुजी,

मैं आपके चरणों में अपना सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ ।

जय गुरु, जय गुरु, जय गुरु ।

क ख ग,

प्रिय क ख ग,

गुरु–प्रक्रिया से तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर इस प्रकार है :–

परमधाम में यानी कि सत्–चित् आनन्द में केवल अस्तित्व होता ह । वहाँ कोई घटना या कोई गति नहीं होती । उसी में, सभी वस्तुओं का आदि और अन्त है । वह रहस्यमय और अज्ञेय है ।

मानव मस्तिष्क में घटनाओं से एवं काल से पूर्ण मुक्ति की क्षमता है । उस मुक्ति की अवस्था में विस्फोट ही एक मात्र प्रबोध का आलोक (enlightenment) है । भ्रामक 'मैं' से मुक्ति अर्थात् 'बनने' के मानसिक–काल से मुक्ति (जीवन को जानने का) प्रथम चरण है और वही अचानक और आश्चर्यजनक रूप से काल से पूर्णतया मुक्ति रूपी अन्तिम चरण भी हो सकता है ।

जय गुरू,

गुरुजी

।। सत्–चित्–आनन्द की जय ।।

।। घटनातीत एवं कालातीत के आनन्द की जय ।।